शिवाजी विश्वविद्यालय
हिंदी विभाग
कोल्हापुर.

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि **द्राक्षायणी अण्णासाहेब शिंदे** का एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत **''संजीव की कहानियों में प्रस्तुत दलित-जीवन का मूल्यांकन''** लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

31.12.05

(*डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण*)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

स्थान : कोल्हापुर।
तिथि : 31 DEC 2005

31 DEC 2005

SHIVAJI UNIVERSITY

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए., बी.एड्., पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्‌यालय,
कोल्हापुर।
तिथि : 3 1 DEC 2005

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **द्राक्षायणी अण्णासाहेब शिंदे** ने शिवाजी विश्वविद्‌यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए **''संजीव की कहानियों में प्रस्तुत दलित-जीवन का मूल्यांकन''** शीर्षक से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं उनके शोध-कार्य से पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ।

शोध-निर्देशक
31.12.05

स्थान : कोल्हापुर।
तिथि : 3 1 DEC 2005

(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण)
Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur-416004.

प्रख्यापन

''संजीव की कहानियों में प्रस्तुत दलित-जीवन का मूल्यांकन'' लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है जो एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्रा

Shinde

(द्राक्षायणी अण्णासाहेब शिंदे)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि 31 DEC 2005

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

प्राक्कथन

प्राक्कथन

स्वातंत्र्यपूर्व काल में साहित्य सिर्फ मनोरंजन के लिए लिखा जाता था। उसमें जासूसी, ऐय्यारी तथा कल्पित घटनाएँ वर्णित करते थे। स्वतंत्रता के बाद साहित्य में बदलाव आया। मानव के बौद्धिक विकास के कारण मनोरंजन ने समाज प्रबोधन एवं समाज सुधार का चोला पहन लिया। कल्पित घटनाओं के बदले यथार्थता को वाणी मिली। साथ ही साहित्य राजनीतिक और आर्थिक परिस्थिति के साथ-साथ नारी जीवन को भी उजागर करने लगा। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण, आर्थिक समस्या तथा वर्तमान समस्या को भी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में दृष्टिगोचर किया।

प्रेमचंद के साहित्य में सर्व प्रथम दलितों को वाणी मिली। सामंतवादी एवं पूँजीपतियों द्वारा होता शोषण तथा वर्गभेद को समाज के सामने प्रेमचंदजी ने प्रस्तुत किया। अन्य साहित्यकारों ने भी दलितों की व्यथा तथा उनका आक्रोश अपने साहित्य में अंकित किया। संजीव जी एक ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होने दलितों को अपना साहित्य-विषय बनाया है। सवर्ण दलित, निम्न वर्ग, आदिवासी तथा नारी जीवन को भी अत्यंत सरलता से तथा यथार्थता से उन्होने चित्रित किया है। शताधिक कहानियों के निर्माणकर्ता संजीव ने अलग-अलग विषयों को अपने साहित्य में सार्थकता से प्रस्तुत किया है। साथ ही इनकी कहानियों में प्राप्त दलित-जीवन, दलित समस्या तथा दलित-विद्रोह का अंकन यथार्थवादी हुआ है। स्वयं भोगे हुए यथार्थ का चित्रण भी उनकी कई कहानियों में प्राप्त होता है। अपनी समस्त कहानियों में दलितों की व्यथा-कथा को अनेक दृष्टियों से देखकर प्रस्तुत करनेवालें कहानी क्षेत्र के वे सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं।

विषय-चयन -

एम्. फिल. के लिए शोध-विषय चयन का सिलसिला शुरू हुआ तब मैने आदरणीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से विचार-विमर्श किया। आपने अनेक विषयों को लेकर मुझसे चर्चा की, लेकिन मेरी रुचि दलित साहित्य में देखकर अनेक साहित्यकारों के नाम

सुझाए। साथ ही अब तक जिनके साहित्य पर शिवाजी विश्वविद्यालय में अभी तक शोध-कार्य नहीं हुआ है, ऐसे हिंदी के सशक्त दलित साहित्यकार संजीव जी का नाम सुझाया। आपने उनके कहानी संग्रह के नाम से अवगत किया। तभी 'प्रेतमुक्ति' कहानी संग्रह का नाम सुनते ही मुझे उस कहानी संग्रह के बारे में और अधिक जानने की उत्सुकता निर्माण हुई। श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से विचार विमर्श के पश्चात् शोध-प्रबंध के लिए ''संजीव की कहानियों में प्रस्तुत दलित-जीवन का मूल्यांकन'' इस विषय का चयन हुआ। संजीव की कहानियों पर अनुसंधान करने से पहले मेरे मन में निम्नांकित सवाल उपस्थित हुए -

1. संजीव जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा है ?
2. संजीव जी ने प्रायः दलितों को ही अपनी कहानियों का विषय क्यों बनाया ?
3. दलित कहानियों के पीछे संजीव जी की क्या मानसिकता है ?
4. क्या इनकी कहानियों में दलित-जीवन का यथार्थ प्राप्त होता है ?
5. दलितों की किन-किन समस्याओं को उन्होने उजागर किया है ?
6. संजीव का साहित्य समाज से क्या अपेक्षा रखता है ?
7. संजीव जी दलित-जीवन का चित्रण करने में कहाँ तक सफल हुए हैं ?

विवेच्य कहानियों के अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में प्रस्तुत किया है। अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत शोध-विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय - ''साहित्यकार संजीव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' के अंतर्गत संजीव जी का सामान्य परिचय दिया है। इसमें जन्म, माता-पिता, बचपन, व्यवसाय, शिक्षा, छात्रजीवन, गुरु, नौकरी, विवाह, संतानें, अभिरुचि, रहन-सहन आदि बातों का विवेचन किया है। साथ ही उनके अंतरंग व्यक्तित्व की विशेषताओं को स्पष्ट किया है। कृतित्व में संजीव जी के साहित्य संसार के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

द्वितीय अध्याय - ''**संजीव की कहानियाँ : वस्तुपरक विवेचन**'' में प्रथमतः कथावस्तु का महत्त्व विशद किया है। फिर संजीव जी के पाँच कहानीसंग्रहों में उपलब्ध पैंतालिस कहानियों का संक्षिप्त रूप से विवेचन किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्षों को दर्ज किया है।

तृतीय अध्याय - ''**विवेच्य कहानियों में प्रस्तुत दलित-जीवन**'' के अंतर्गत दलित-जीवन पर प्रकाश डाला है। दलितों का रहन-सहन, खान-पान, व्यसनाधीनता, शिक्षा व्यवस्था, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय, अंधविश्वास, जाति भेदाभेद, संगठन एवं समूहभावना, राजनीतिक स्थिति, लोककथा तथा लोकगीतों का विस्तृत विवेचन किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

चतुर्थ अध्याय - ''**विवेच्य कहानियों में प्रस्तुत दलित-समस्याएँ**'' में दलितों में व्याप्त समस्याओं को उजागर किया है। आर्थिक स्थिति से दयनीय एवं दुर्बल प्राथमिक आवश्यकताओं से किस प्रकार वंचित है। साथ ही शिक्षा, नशापान, अंधविश्वास, जातिभेद, भ्रष्टाचार, शोषण आदि समस्याओं के साथ-साथ नारी शोषण का भी विस्तृत विवेचन किया है। बाढ़ की समस्या, धर्मपरिवर्तन की समस्या तथा छात्रावास में लड़कों का होता शोषण भी प्रस्तुत किया है। विवेच्य कहानियों में प्राप्त समस्या पर सार्थकता से प्रकाश डाला है। अंत में प्राप्त निष्कर्षों को अंकित किया है।

पंचम अध्याय - ''**विवेच्य कहानियों में प्रस्तुत दलित-विद्रोह**'' के अंतर्गत विद्रोह की व्युत्पत्ति, तात्पर्य तथा अर्थ को विशद किया है। फिर विवेच्य कहानियों में प्रस्तुत विद्रोह के अंतर्गत समाज के प्रति, उच्च वर्ग के प्रति, धर्म के प्रति विद्रोह तथा सवर्ण दलित, नारी, आदिवासी एवं बेरोजगार युवकों का विद्रोह आदि का विवेचन किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है।

'उपसंहार' में इस विषय के अध्ययन से प्राप्त समन्वित निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है। दलित-जीवन, उनमें होनेवाला परिवर्तन, उनमें निर्माण होनेवाली चेतना आदि का लेखा-जोखा यहाँ प्रस्तुत हुआ है।

अंत में परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. ''संजीव की कहानियों में प्रस्तुत दलित-जीवन का मूल्यांकन'' यह लघु शोध-प्रबंध स्वतंत्र रूप से प्रथमतः ही संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में संजीव जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।
3. संजीव की कहानियों में चित्रित दलित-जीवन के विविध पहलुओं की तलाश की है।
4. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में संजीव की कहानियों में चित्रित मजदूर, सपेरा, मास्टर, निम्न वर्ग, सवर्ण-दलित तथा नारी जीवन का सूक्ष्मता से एवं गहराई से अध्ययन करते हुए देहातों में स्थित दलित-जीवन को बारीकी से व्याख्यायित किया है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले मेरे हित-चिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य मानती हूँ।

श्रद्धेय आदरणीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण सर जी का आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास अल्फाज नहीं हैं। आपका स्नेह, प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन मेरे लिए जीवनभर की पूँजी है। शोध-प्रबंध के विषय चयन से लेकर प्रस्तुतीकरण तक आपका मार्गदर्शन मेरे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। आपके प्रति आभार प्रकट करना यह मेरे लिए धृष्टता होगी। मैं आपके सामने नतमस्तक होने के सिवाय और क्या कर सकती हूँ। आपके आशीर्वाद के साएँ में जीवनभर रहना चाहूँगी। आपका मार्गदर्शन तथा स्नेह इसी तरह मिलता रहे यही प्रार्थना करती हूँ। गुरुवर्य की जीवनसंगिनी श्रद्धेय चव्हाण मैडम का आशीर्वाद, स्नेह तथा प्रोत्साहन मेरे लिए अनमोल है। आप दोनों के स्नेह की मैं हमेशा अभिलाषी रहूँगी।

आदरणीय साहित्यकार संजीव जी के प्रति आभार प्रकट करना मेरा परम् कर्तव्य है। संजीव जी ने समय-समय पर मेरे खतों के जवाब दिए तथा मेरे मन में उपस्थित सवालों को भी सुलझाया है। संजीव जी का स्नेह तथा आशीर्वाद मेरे लिए प्रेरणादायी है। संजीव जी के मित्र रविशंकर सिंह जी जिन्होने संजीव के अप्राप्य कहानीसंग्रह की झेरॉक्स कापियाँ भेजकर मेरी जो सहायता की उसके लिए मैं उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

मेरा शोध-प्रबंध पूरा करने में सहायता करनेवाले गुरुजन तथा मित्र परिवार के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ। प्रा. एस्. एम्. मणेर सर, प्रा. निंबाळकर मॅडम, प्रा. एकनाथ पाटील आदि के प्रति भी आभार प्रकट करना मेरा परम कर्तव्य है। साथ ही किरण देशमुख, किरण चौगुले, रसीद भैय्या आदि दोस्तों के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ। मेरी प्यारी सहेलियाँ अल्फाज, मनिषा, पूनम, जयश्री, तस्नीम, पिंकी कपुर, सविता, क्रांति, शैलजा, सायली, निवेदिता, सुकेशिनी, अफसाना, कविता आदि ने मेरा हौसला बढ़ाया तथा मुझे आगे बढ़ने की हिम्मत दी जो मेरे लिए अनमोल है।

मेरे माता एवं पिता के आशीर्वाद से मैं इस मंजिल पर पहुँची हूँ। मेरे माता-पिता का स्नेह तथा प्रेरणा से मैं यह कार्य पूरा कर सकी। मेरे भाई जितेंद्र तथा वैशाली भाभी जिन्होंने मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित किया तथा घर की हर जिम्मेदारी से मुक्त कराया इसके लिए मैं इनकी आजन्म ऋणी रहूँगी। मेरा छोटा भतीजा श्रेयश तथा भतीजी सोनू का प्यार भी इस प्रबंध को पूरा करने में सहयोगी रहा है।

माधुरी तथा भागवत दादा जिन्होंने हर कदम मेरा साथ दिया, इनके प्रति आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं आप दोनों के प्रति आजन्म ऋणी रहूँगी। मुझे हर पल प्रोत्साहित करनेवाले तथा हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देनेवाले मेरे स्वकीय मामा, मामी, मौसी, काका, काकी, अनिल आण्णा, पटाईत भाभी, जीजाजी प्रा. मच्छिंद्र कांबळे तथा ज्ञात अज्ञात हितचिंतकों के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ।

हिंदी विभाग के लिपिक अनिल साळुंखे तथा शिवाजी विश्वविद्याल के ग्रंथालय के कर्मचारियों के प्रति भी मैं विशेष आभारी हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध को टंकण करनेवाले

अल्ताफ मोमीन जी और सौ. निकहत मोमीन तथा नवरंग प्रिंटिंग प्रेस के कर्मचारियों का भी मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होने वक्त पर यह काम पूरा करके मुझे सहेयाग दिया। अतः इस कार्य को संपन्न बनाने में जिन विद्वानों ने एवं स्वजनोने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता की है उनके प्रति आभार मानकर इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षाणार्थ विद्वानों के सामने प्रस्तुत करने का विनम्र साहस करती हूँ।

शोध-छात्रा

Shinde

(द्राक्षायणी अण्णासाहेब शिंदे)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 31 DEC 2005